शिवमूर्ति के कहानी संग्रह केशर कस्तूरी में स्त्रीचेतना

चन्द्रमा प्रसाद*

सारांश

समाज के प्रमुख स्तम्भ के रुप में नारी ने जहाँ आधार भूमि दी है, विधि की मनोज्ञतम सृष्टि होने के कारण वहीं वह उसके भावलोक को कल्पना की मृदुल रश्मियों से रंजित वह आलोकित भी करती आई है। नारी साहित्य रचना का सशक्त तत्व तो अवश्य रही है, लेकिन युगानुरूप उसको देखने की दृष्टि में परिवर्तन होता रहा है। प्राचीनकाल में नारी नायिका के रूप में ही साहित्य का विषय बन पायी थी। उसके अन्य पक्ष साहित्य में उभर नहीं पाए थे। कुछ निवृत्तिवादी कवियों ने अपने काव्य में नारी को मनुष्य की मोक्ष साधना के मार्ग की बाधा माना है तथा उसे पतन की ओर अग्रसर करने वाली चित्रित किया है। रीतिकालीन काव्य में नारी–नायिका, अभिसारिका, प्रेयसी आदि रूपों में देखी जाती रही। उसका न तो स्वयं कोई अस्तित्व था और न व्यक्तित्व ही। वह पुरुष की आत्म तुष्टि एवं भोग का साधन मात्र रह गयी थी। पुरुष को अपने प्राणार्पण से संतुष्ट करना ही उसका प्रमुख कर्तव्य था।

मुख्य शब्द– स्तम्भ, मनोज्ञतम, अभिसारिका, प्रेयसी, सशक्त, केसर कस्तूरी, सनिचरी (अधरंगी), अखंड रूप, जोग, जुझारूपन, तिरस्कार, कुव्यसन, कंचन, दहलीज, स्वर्णिम आभा ।

प्रस्तावना

आधुनिक काल में नारी के प्रति दृष्टिकोण बिल्कुल बदल गया है। इस युग के कवियों ने रीतिकाल की अपेक्षा नारी को एक नवीन दृष्टि से देखा है।

'स्वच्छंद युग में नारी के प्रति कदाचित् अधिक व्यावहारिक दृष्टि अपनायी है। जहां उसने आदर्श और कल्पना की उच्च भूमि पर नारी को परमशक्ति और पूज्य माना है, वहीं व्यवहार की जीवन भूमिपर उसे कर्म प्रेरिका और सुख–दुःख की चिर संगिनी के रूप में भी अपनाया है।' [1]

शिवमूर्ति की रचना 'यह केसर नहीं केसर के रूप में मूर्त हिंदुस्तानी नारी का हजारों – हजार पीढ़ियों से विरासत में मिला अनुभव और यथार्थ को उसके ठोस व्यावहारिक रूप में पकड़ लेने की उसकी अंतश्चेतना बोल रही थी। कसाईबाड़ा, अकाल–दंड, सिरी उपमाजोग, तिरिया चरित्तर में स्त्री चेतना तथा उनकी सुरक्षा और संरक्षण के बावजूद उन पर होने वाली ज्यादतियों और अत्याचारों के मामलों में बढ़ोतरी चिंता का कारण है। इन चिंताओं को सजग और सशक्त बनाया जाय।

सृष्टि के प्रारंभ से विकास के उन्नयन तक उसकी स्वयं को स्थापित करने की महायात्रा अभी भी जारी है। उत्तर भारत के गांवों को समग्रता से प्रस्तुत करने वाला कहानी – संग्रह 'केसर– कस्तूरी' मन को मुग्ध कर जाता है। उसे पढ़कर हमें अनायास ही वहां के रीति–रिवाज, ईर्ष्या–द्वेष, प्रकृति, यौन–बुभुक्षा मूल्य ही राजनीति तथा उन सबके बीच भटकती लाचार जिंदगियों की वेदना से परिचित हो जाता है।

कसाईबाड़ा कहानी राजनीतिक परिदृश्य को इस तरह उभारती है कि दृश्य पाठक के सामने उभरने लगते हैं, गांव में बिजली की तरह खबर फैलती है कि सनिचरी धरने पर बैठ गई है, परधानजी के दुआरे। लीडर जी कहते हैं, 'जब तक परधानजी उसकी बेटी वापस नहीं करते, सनिचरी अनशन करेगी, आमरण अनशन।' [2]

यद्यपि यह कहानी गांव की राजनीति को आधार बनाकर सनिचरी (अधरंगी) को अपने हक के लिए लड़ना सिखाती है। इस कहानी का पात्र अधरंगी जो प्रतीक बनकर उभरता है सिद्धांतवादी जीवन जीने वाले व्यक्ति का। आज हमारे समाज की स्थिति ऐसी हो चुकी है कि अगर कोई व्यक्ति अपने सिद्धांतों के बल पर जीना चाहता है तो वह तथाकथित सभ्य लोगों के द्वारा विचित्र घोषित कर दिया जाता है। अकाल दंड भी इसी क्रम को आगे बढ़ाती है। पहली कहानी के केंद्र में 'सुरजी' एक जुझारू और अपनी जान को दांव पर लगा अपनी अस्मिता की रक्षा करने वाली अत्यंत गरीब खुशमिजाज सूरजी

आगे बढ़ने के बजाय हंसते हुए रुक गए सिकरेटरी बाबू। फिर बोले – जरा अपनी दाहिनी हथेली तो दिखाना सुरजा.....।[3] सुरजी के गांव में अकाल पड़ता है जिसमें सभी गांव वालों का जीवन यातनामय हो जाता है। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा एक राहत समिति बनाकर सहायता की जाती है जिसके वितरण का सारा दारोमदार दुष्चरित्र सेकरेटरी को सौंपा जाता है। जिसमें उसकी नजर सुरजी पर पड़ती है और तभी से शुरू हो जाता है सुरजी के ऊपर अकाल के दंड का भरपूर असर। सुरजी उसके इस विचार को बड़ी ही चतुराई से उखाड़ फेंकती है, वह अपमानित सा चला जाता है। यहां पर सुरजी का स्त्रीचेतना का अखंड रूप दिखाई पड़ता है।

* शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड

'सिरी उपमा जोग' इस कहानी – संग्रह की सबसे छोटी किन्तु, सर्वश्रेष्ठ कहानी है। ग्रामीण मानसिकता जब तक रहती है, आदमी सीधा–सच्चा ईमानदार बना रहता है, रिश्तों की संवेदना बनी रहती है और उसमें इंसानियत भी कायम रहती है, जैसे ही उस पर शहरी मानसिकता हावी हो जाती है, कोरा अहंकार बढ़ जाता है, स्वार्थ सिद्धि बढ़ जाती है, तो उसके रिश्तों में व्याप्त प्रेम कैसे टूट कर बिखर जाता है,– 'सिखाएगा कौन ? यह तो सनातन से होता है। मैं तो आपकी सीता हूँ जब तक बनवास में रहना पड़ा, साथ रही लेकिन राजपाट मिल जाने के बाद तो सोने की सीता ही साथ में रहेगी। लालू के बाबू, सीता को तो आगे भी बनवास ही लिखा रहता है।'[4] व्यक्ति के व्यक्तित्व में कितनी तेजी से परिवर्तन होता है, इसको सजीवता से प्रस्तुत करती है कहानी 'सिरी उपमा जोग' इसमें स्त्री का जुझारूपन, उसकी निस्वार्थ प्रवृत्ति, पति के प्रति अनन्य प्रेम, 'चिठ्ठी खोलकर वे पढ़ना शुरू करते हैं– सिरी उपमा जोग, खत लिखा लालू की माई की तरफ से, लालू के बप्पा को पांव छूना पहुंचे.....।'[5] शहरी परिवेश के कारण युवक की मानसिकता में आया परिवर्तन, उसका स्वार्थ से सराबोर हो जाना, दूसरा विवाह कर लेना आदि – आदि बातों को संपूर्णता से इतनी छोटी कहानी में व्यक्त कर देना शिवमूर्ति जैसे कथाकार के बस की ही बात है।

'भरतनाट्यम' कहानी कभी–कभी रोजगार पाने वाले और अधिकतर बेरोजगार रहने वाले युवक के इर्द–गिर्द घूमती है। बेरोजगारी की अवस्था में परिवार वाले, व्यक्ति के साथ कितना नीचा व्यवहार कर सकते हैं। एक तो वह व्यक्ति विवाहित है, तीन लड़कियों का पिता है। कहने का तात्पर्य यह है कि इस कहानी में यह बात हर कदम पर दर्शायी गयी है कि पैसे के बिना व्यक्ति तथा उसके बच्चों की कितनी दुर्दशा होती है –'यहाँ–मास्टरी छोड़ने के बाद घर में मेरी रही – सही साख भी समाप्त हो गई थी। हर सदस्य मुझसे पहले से अधिक दूर हो गया.....।'[6]

अगर कोई स्त्री, पुरुष सत्ता से टकराने की हिम्मत रखती है, तो उसके साथ किस हद तक बर्बर एवं दिल दहलाने वाला व्यवहार किया जा सकता है, इसे सजीवता एवं जीवंतता से प्रस्तुत करती है कहानी 'तिरिया चरित्तर'। 'अपनी–अपनी पसंद। कुइसा को औरतों की गालियां और मिल जाए तो धक्का खाना पसंद है। अगर चार औरतें मिलकर उसे नदी में डूबोने लगे तो भी वह इनकार नहीं कर सकता।'[7]

कहानीकार ने केसर के रूप में हजारों – हजार सालों की अनुभव रखने वाली भारतीय नारी का मूर्त रूप गढ़ा है। 'आत्मविश्वास से सराबोर नारी है केसर। जाते हुए पिता को आश्वस्त करने लगती है, मोछिया तोहार बप्पा 'हेठ' न होइ है, पगड़ी केहू ना उतारी, जी – ई – ई'।[8] भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करने वाली सीता द्वारा गाया गया गीत जो उत्तर भारत के गांवों में बहुत लोकप्रिय है। एक बार फिर कहना पड़ता है कि स्त्री मन की परख रखने वाले शिवमूर्ति ने अपने कथा कौशल से अपने पाठकों का मन मोहा है। यहां वे यह भी संकेत देते हैं कि गरीबी और ग्रामीण रुढियों को मानने के कारण पढ़ाई में रुचि रखने वाली केसर को उसके पिता पढ़ा नहीं पाते। अगर वे उसकी शादी करने के स्थान पर उसको पढ़ाने की हिम्मत जुटाते तो केसर का जीवन वैसा न होता, जैसा आज है।

शिवमूर्ति की कहानी की नायिकाएं रोने – पीटने वाली न होकर परिस्थिति से जूझने वाली स्त्रियां हैं। इस कहानी की नायिका भी ऐसी ही स्त्री है। यद्यपि वह पढी – लिखी नहीं है और उसका बाल विवाह हुआ है जिस कारण वह यह सब दुःख झेलने के लिए मजबूर है तथापि वह इसका रोना नहीं रोती। एक तरफ भावनाओं की प्रधानता और दूसरी तरफ व्यावहारिक कठोरता, दोनों ही अपने चरम पर है।

युग–युग से भारत में नारी उपेक्षित रही है। पुरुष सदा उसे सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक दासता की बेडी में बांधता रहा। दासता के विरोध में उनके पात्र इनकी निर्थकता पर प्रश्नचिन्ह लगाते हुए दिखाई देते हैं।'[9] इतना ही नहीं इन कर्मकांडों और शास्त्रों ने नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय बना दी है क्योंकि ऐसे समाज में 'स्त्रियों के बलिदान का भी कोई मूल्य नहीं.....अपने निर्बल और अवलम्ब खोजने वाले हाथों से यह पुरुष के चरणों को पकड़ती है और वह सदैव इसको तिरस्कार, घृणा और दुर्दशा की भिक्षा से उपकृत करते हैं'।[10]

शिवमूर्ति जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी समस्या के विभिन्न पक्षों को उभारा है। उन्होंने विधवा विवाह, अनमेल विवाह, दहेज, पर्दा जैसी कुप्रथाओं को स्थूल समस्याओं का रूप न देकर, उन्हें व्यापक धरातल पर रखकर जांचने परखने का काम किया है।

महादेवी वर्मा मानती हैं कि नारियां स्वयं को परिस्थितियों के अनुकूल ढालने में निपुण होती हैं। इस संदर्भ में वे पुरुषों की अपेक्षा आगे हैं क्योंकि पुरुष अपनी व्यथा को भूलने के लिए तथा उल्लास की भावना को अभिव्यक्त करने के लिए मदिरा जैसे कुव्यसनों का सहारा लेता है, परंतु स्त्री दुःख के क्षणों को जीवन की शक्ति, परीक्षा एवं चुनौती के रूप में ग्रहण करती है और जीवन में अपना कर्तव्य निभाते हुए सुख को प्राप्त करने की क्षमता रखती है

अर्थात अपने कर्तव्यों को करने में ही वह असीम सुख का अनुभव करती है।[11]

शिवमूर्ति जी ने अपने संपर्क में आई हुई स्त्रियों के संस्मरण लिखे हैं, उनके जीवन भारतीय समाज के कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं लेकिन उनके पात्र इन समस्याओं के सम्मुख हार नहीं मानते हैं। स्त्री विषयक समस्याएं अनंत हैं, जिनका एक रूप परिवार से जुड़ा है। शिवमूर्ति की नायिकाएं सामाजिक लोगों द्वारा प्रताड़ित ऐसी स्त्रियां हैं, जिसमें दृढता और साहस के साथ संघर्षों का सामना करने की अपूर्व क्षमता है। वे परिस्थितियों के सम्मुख हार नहीं मानती हैं। शिवमूर्ति के सामान्यतः सभी नारी पात्र, पुरूष समाज के अत्याचारों के विरुद्ध उसके संघर्ष की गाथा को बयान करते हैं। दुःखों व चुनौतियों की निरंतरता तथा आर्थिक अभावों को झेलते हुए भी वे सभी जीवन – समुद्र को अकेले तैर कर पार करने के आत्मविश्वास और साहस से परिपूर्ण हैं। वे पराजित होने पर भी पराजय स्वीकार नहीं करती हैं, क्योंकि उनमें कभी न बुझने वाली आग सदा धधकती रहती है। यही आग उन्हें जीवन संग्राम से भागने नहीं देती भले ही जीवन युद्ध में संघर्ष के लिए उसके सभी अस्त्र क्यों न टूट चुके हों। वे पहाड़ के समान अडिग साहस से निर्भीकता पूर्वक जीवन पर्यंत उन संघर्षों का सामना करती है।

निष्कर्षतः आज की नारी नये दौर की दहलीज पर खड़ी शाश्वत कर्तव्य बोध के बोझ से झुकी हुई नहीं है। वह जागरूक है, अपनी अस्मिता, गरिमा व प्रतिष्ठा को बचाकर वह ऊंचाइयों को छूने में प्रयत्नशील है। इस नए दौर की नारी के पास चिंतन है, अहसास है और उसे प्रकट करने के लिए कलम। नारी वर्षों से चल रही आग में तप कर 'कंचन' हो गई है तथा अपनी स्वर्णिम आभा चारों ओर बिखेर रही है। 'आग से तपकर जो निकला वो 'रमा' कंचन हुआ, बात तो सच है मगर यह देर में माने सभी।'[12]

संन्दर्भ ग्रंथ

1.1 मूल संन्दर्भ

1 . डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली ।

2 . शिवमूर्ति, सृजन का रसायन, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2014 ।

3 . शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

4 . राय, विजय, लमही अक्टूबर–दिसम्बर, 2019।

1.2 सहायक

1 . अमृत पुत्र निराला, सं. – भगवान शरण भारद्धाज प्रकाशन बुक डिपों, बडा बाजार, बरेली ।

2 . शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी (कसाईबाड़ा) राजकमल प्रकाशन, पृ. सं., 07

3 . शिवमूर्ति, केशव कस्तूरी (अकाल दंड) राजकमल प्रकाशन, पृ.सं., 28।

4 . शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी (सिरी उपमा जोग) राजकमल प्रकाशन, पृ.सं., 57

5 . शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी (सिरी उपमा जोग) राजकमल प्रकाशन पृ. सं., 53 ।

6 . शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी (भरतनाट्यम) राजकमल प्रकाशन पृ. सं., 70 ।

7 . शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी (तिरिया चरित्तर) राजकमल प्रकाशन पृ. सं., 82

8 . शिवमूर्ति, केशर कस्तूरी (केशर कस्तूरी) राजकमल प्रकाशन पृ. सं., 139–140 ।

9 . 'आपका कर्मकांड और आपके शास्त्र क्या सत्य हैं, जो सदैव रक्षणीय स्त्री की यह दुर्दशा हो रही है,' ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद पृ. सं. 64 ।

10 . ध्रुवस्वामिनी, प्रसाद पृ. सं. 35 ।

11 . महादेवी साहित्य समग्र, सं. निर्मला जैन पृ. सं. 306 ।

12 . नारीः एक सफर, पृ. 192–194 , संम्पादक – दिनेश नन्दिनी डालमिया संन्तोष गोयल ज्ञान भारती – दिल्ली ।